डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

Scanned By Scanner Go

प्रश्न - क्वीता पीठ की उपलब्धि पर प्रकाश डालें ?

उत्तर :→ क्वीटा पीठ जन्मजात राजनीतिज्ञ एक कुशल वक्ता तथा लोकनायक था। इसका चरित्र अनेक गुणों से भरा पड़ा है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि उसकी नीति भी अति प्रशंसनीय है। ईमानदारी तो उसमें कुट-कुट कर भरी हुई थी। वह योग्य पिता का योग्य पुत्र था। वह परिश्रमी तथा आत्मविश्वासी था। भाषण देने की कला में निपुण एवं अर्थशास्त्र का विद्वेश ज्ञाता था। उनका जन्म 1759 ई० में हुआ था। वह बड़ा पीठ का दूसरा पुत्र था। जिस समय उनका जन्म हुआ था। उस समय इंग्लैंड को एक बहुत बड़ी विजय हासिल हुई थी। यही कारण है कि इंग्लैंड के लोग उसे बहुत ही भाग्यशाली समझते थे।

(i) शिक्षा :→ उसका लालन-पोषण एवं शिक्षा-दीक्षा एक राजकुमार की तरह हुआ। उसे स्कूल की की पढ़ाई की समाप्ति के बाद उसने कॉलेज में दाखिल होकर उच्च शिक्षा प्राप्त की। बाल्य अवस्था से ही उसने होनहार के गुण परिलक्षित हो रहे थे। वह तेज बुद्धि का बालक तो था ही लेकिन साथ ही साथ उसमें राजनीत की ओर प्रारंभिक अवस्था से ही विशेष झुकाव था वैसे भी उसके पिता इंग्लैंड के देश में प्रधानमंत्री के पद को सुशोभित कर रहे थे और यही कारण है कि उसे राजनीती में विशेष कठिनाइयों का सामना नही करना पड़ा।

(ii) संसद का सदस्य :→ 1780 ई० में वह पहली बार संसद

Scanned By Scanner Go

का सदस्य चुना गया। और संसद का सदस्य चुने जाने के बाद वह सिर्फ जनता की सुख-सुविधाओं के लिए दिन-रात सोचता रहता था। उनकी इन प्रेम पूर्ण व्यवहार के कारण इंग्लैंड की जनता उसे हथेली पर उठा लिया। और यही कारण है कि सेल बीड़ मंत्रीमंडल के समय वह हाउस ऑफ कॉमन का नेता और कोषाध्यक्ष चुना गया। संयुक्त मंत्रीमंडल के समय उसने इंडिया बील का जमकर विरोध किया था। सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह राजा का सबसे प्रिय एवं विश्वास पात्र व्यक्ति था।

iii) प्रधानमंत्री के पद पर :→ अपनी ईमानदारी और प्रेम पूर्ण व्यवहार के कारण वह दिन-प्रतिदिन वह आगे बढ़ता चला गया। अपने प्रेम-पूर्ण व्यवहार के कारण वह राजा का दिल इस तरह जीत लिया था कि अब बदली हुई परिस्थिति में राजा अब उसे प्रधानमंत्री बनाना चाहते थे, केवल समय का इंतजार था। और इस प्रकार अपनी क्षमता, बाहुबल और कठिन परिश्रम से मात्र 24 वर्ष की उम्र में ही वह इंग्लैंड का प्रधानमंत्री बन बैठा और इस पद पर वह 17 वर्षों तक बना रहा। तथा जनता की सेवा करता रहा। लेकिन 1801 ई० में कैथोलिको के प्रश्न पर कुछ समस्या ऐसी आयी कि जिससे उन्होंने त्याग पत्र दे दिया। लेकिन फिर भी 1804 ई० में जब इंग्लैंड पर नेपोलियन का हमला होने की संभावना मंडराने लगी तो उसे पुनः प्रधानमंत्री का भार दे दिया गया, इस क्रम में भी उन्होंने

Scanned By Scanner Go